International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(III), April - June, 2023, pp. 211-213

आत्मनिर्भर भारत : गांधीय प्रतिमान और समकालीन संदर्भ

दुर्गालाल यादव*

प्रस्तावना

आजादी के बाद भी देश की आधी से अधिक आबादी खुले में शौच करती है जो कि वाकई में चिंता का विषय है। शौचालयों का नहीं होना पानी का अभाव या अपर्याप्त प्रौद्योगिकी के कारण संचालन और रखरखाव के अभाव के कारण हालात नहीं सुधर रहे है। ऐसा नहीं है कि शौचालय बनाने की दिशा में औी तक कोई कार्य नहीं किया गया लेकिन यह कार्य बेहद धीमी गति से हुआ और जो हुआ वह भी गुणवता या रखरखाव में कमी या संचालन के अव के कारण लोगों के जीवन सतर में उतना परिवर्तन नहीं ला पाया जितना की इतिने वर्षों में आना चाहिए था। आज भी ग्रामण क्षेत्रों में 590 मिलियन लोग खुले में शौच करने को मजबूर है।[1]

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2014 को दिये अपने भाषण में देश में स्वच्छता की स्थिति पर अप्रसन्नता व्यक्ति की थी और वर्ष 2019 में महात्मा गांधी की 150वी जयंती पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करनते हुए खेले में शौच की प्रथा को समाप्त कर स्वच्छ भारत का लक्ष्य हासिल करने की प्रतिबधता व्यक्त की थी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत को एक जन आंदोलन बनाने और इसे आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने का आहवान किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हर नागरिक स्वच्छता के लिए एक साल में 100 घंटे का योगदान करने की शपथ ले। प्रधानमंत्री ने कहा कि सभी सरकारी विभाग इस अभियान में सक्रिया रूप से भाग लेगें। सरकारी कार्यालय पंचायत स्तर अभियान में शामिल किए जायेंगे और यह अभियान 25 सितंबर 2014 से दिवाली तक आयोजित किया जायेगा।[2] प्रधानमंत्री की अपील को देखते हुए निगमित क्षेत्र की कई कंपनिया अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के अंतर्गत स्वच्छ भारत अभियान में योगदान के लिए तैयार है।

2 अक्टूबर 2014 से देशभर में स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया जा रहा है। मंत्रिमंडल ने भी इस अभियान को शुरू करने के लिए अपनी मंजूरी दे दी है इस अभियान को शुरू करने के लिए गांधी जयंती का अवसर चुना गया है।[3] चूंकि स्वच्छ भारत का सपना गांधीजी ने संजोया था।

गांधीजी के नेतृत्व का प्रमुख घटक था, उनकी दूरदृष्टि। यह दृष्टि, जो ईश्वर की सर्वोत्तम रचना अर्थात मनुष्य को सत्य, न्याया, प्रेम और अहिंसा का दृढ़ता से पालन करते हुए, सद्भाव व शान्ति से रहने की क्षमता दे सकती है। अहिंसा हमार जातिगत नियम है, ठीक उसी तरह जैसे हिंसा पशु का नियम है। पाशविक व्यक्ति की अंतरात्मा प्रसुप्त होती है, वह बल प्रयोग के अतिरिक्त और कोई भी नियम नहीं जानता। मानव की गरिमा उसे एक अन्य नियम का पालन करने के लिए प्रेरित करती है– वह है अंतरात्मा का नियम मानव जाति

* शोधार्थी, एम.फिल., गांधी अध्ययन केंद्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

[1] राजस्थान पत्रिका, आत्मनिर्भर भारत के लिए पैकेज जयपुर राजस्थान, 10 अप्रैल 2020।

[2] राजस्थान पत्रिका, झा प्रभात, अब आत्मनिर्भरता की और बढ़ रहा है भारत, जयपुर, राजस्थान, 28 मई 2020, पृ. 81।

[3] राजस्थान पत्रिका, शाह अमित, आत्मविश्वास से भरा आत्मनिर्भर भार, जयपुर, राजस्थान, 30 मई 2020 पृ. 8।

पर प्रेम का नियम ही राज्य कर सकता है। यदि हम पर हिसा अर्थात घृणा का राज्य होता तो हम बहुत पहले ही विलुप्त हो चुके होते। मानव जाति को केवल अहिंसा के मार्ग पर चल कर ही हिंसा से छुटकार मिल सकता है. घृणा पर केवल प्यार द्वारा विजय पाई जा सकती है।

गांधी के लिए सत्य उतना ही वास्तविक और सर्वशक्तिमान था जितना स्वयं ईश्वर। वस्तुतः सत्य ही ईश्वर है और ईश्वर ही वह सच्चाई है जो शाश्वत है। उनका कथन था, 'विश्व सत्य की आधारशिला पर टिका हुआ है इसलिएकभी भी नष्ट नहीं किया जा सकात। संक्षेप में यही सत्याग्रह का सिद्धान्त है।'[1] सत्य सही मार्ग है, और जो सही है वही शक्तिशाली है न कि उसका विलोम वे अक्सर भगवद्गीता के दार्शनिक दृढ कथन, सत्यनास्ति परो धर्म, अर्थात सत्य का परिपालन करने से बड़जा कोई कर्तव्य नहीं है, को उद्धत करते थे।

साहस और चरित्र, गांधी जन्म से साहसी नहीं थे। अपने बचपन और युवावस्था में वे बेहद शर्मीले थे। बचपन में वे सांपों, भूतों, चोर–डाकुओं और अंधेरे से बहुत घबराते थे। उनकी स्वामिभक्त सेविका रम्भा ने उन्हें इस प्रकार के भय पर विजय पाने के लिए बार–बार यह समझाया कि राम नाम का जाप इस पर विजय पाने का सबसे प्रभावी तरीका है।[2] अपने स्कूल के दिनों में वे विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते थे जिसमें खेलकूद भी शामिल थे। कई बार खेल के मैदान में उन्होंने अम्पायर, निर्णायक की भूमिका भी निभाई पर यह आत्म विश्वास केवल उन लोगों तक ही सीमित था जिनसे वे भलीभांति परिचित थे।

सन् 1892 में लंदन से लौटने पर जब उन्होंने बम्बई में वकालत शुरू की, उस समय तक वे इतने भीरू थे कि वे अपने पहले मुकदमे में ही बहस करने में असफल रहे। अपनी आत्मकथा में वे लिखते हैं, 'मैं खड़ा हुआ, पर मेरा ह्यदय मानों बैठ गया था। मेरा सिर घूम रहा था और मुझे ऐसा लगा जैसे पूरा अदालत कक्ष घूम रहा हो। पूछने को मुझे एक भी प्रश्न नहीं सूझा। न्यायाधीश जरूर हंस पड़े होंगे, किन्तु मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैं बैठ गया और मैंने मुवक्किल से कहा कि मैं उनका मुकदमा नहीं लड़ सकता। मैं हड़बड़ा कर अदालत के कमरे से भाग खड़ा हुआ, विना यह जाने कि मेरा मुवक्किल हारा या जीता। मैं स्वयं पर शर्मिन्दा था और मैंने तब तक कोठ भी मुकदमा अपने हाथ में न लेने का निर्णय किया जब तक में सही रूप में बहस करने का साहस नहीं जुटा पाता। सच तो यह है कि मैं दक्षिण अफ्रीका जाने तक दोबारा अदालत में गया ही नहीं।'[3]

अपने डरपोक स्वभाव से निर्भीकता का परिवर्तन सर्वप्रथम उनमें तब आया जब दिसम्बर 1892 में राजकोट में ब्रिटिश पोलिटिकल एजेंट चार्ल्स ऑलिवेंट द्वारा उन्हें अनादर के साथ दफ्तर से बाहर निकाल दिया गया। लन्दन से ही उनसे परिचित होने के कारण, गांधीजी अपने भाई लक्ष्मीदास की ओर से चार्ल्स ऑलिवेंट द्वारा प्रतिकूल नोटिस जारी किए जाने के कारण मध्यस्थता करने आए थे। वे उस अशिष्ट व्यवहार के कारण इतेन क्षुब्ध हुए कि उन्होंने उसका उल्लेख श्पहले झटके के रूप में किया। इस श्पहले झटकेश ने उनके जीवन का मार्ग इस प्रकार बदल दिया कि उन्होंने ऑलिवेंट के इस आघात के विरूद्ध कानूनी कार्यवाही करने की दिशा में गम्भीरता से विचार किया।[4] विख्यात बैरिस्टर फिरोशाह मेहता ने उन्हें उसके विपरीत सलाह दी। किन्तु ऑलिवेंट के इस दुर्व्यवहार के बाद उन्होंने किसी अनुपयुक्त मामले में सहयोग न बनने का और किसी भी प्रकार से भारत छोड़ने का निश्चय कर लिया। इस घटना के तुरन्त बाद उनको दक्षिण अफ्रीका की डरबन स्थित अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी द्वारा उनके कानूनी सलाहकार बनने का निमंत्रण मिला, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। पहले झटके के विषय में लेखक एन्थनी कोपले लिखते हैं कि इस झटके से गांधी ने एक बहुत दूरगामी शिक्षा ली, की आने वाले समय में ईमानदारी और भ्रष्टाचार विरोध सार्वजनिक नीति को परिवार जाति और समुदाय की सभी मांगों से परे स्थान दिया जाए ताकि एक ऐसी मूल्यांकन प्रणाली विकसित हो जो भारतीय समाज को इस सर्वनाशी परिणाम से बचाए।

---

[1] दशरथ शर्मा, गांधीवादी की विनोबा की देन, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, बिहार 1980।

[2] डॉ. वीरेन्द्र शर्मा, आधुनिक भारतीय पुर्ननिर्माण में गांधी जी का योगदान, पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1986।

[3] एम. के. गांधी, ट्रस्टीशिप, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद 1960।

[4] अग्रवाल व श्री राम, शोशल चेन्ज इन इण्डिया इश्यू एण्ड प्रोस्पेटिव यूनिवर्सिटी बुक डिपों जयपुर, 1987।

गांधी यद्यपि पूरी तरह से भारत के स्वतंत्रता संग्राम में लीन थे, वे विश्व और विश्व में आए संक्रमण काल के प्रति सदैव सचेत रहे दुनिया के प्रति उनका दृष्टिकोण विशाल और प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टि रखने वाला था।[1] इंग्लैण्ड में शिक्षा प्राप्त करने के कारण वे वहां की राजनीति संस्कृति और लोगों से भलीभांति परिचित थे। वहां उनके कई मित्र थे विशेषज्ञ रूप से शाकाहारी थियोसोफिस्ट और उदारवादी दक्षिण अफ्रीका जहां उन्होने इक्कीस वर्ष व्यतीत किये वहां उन्होंने अंग्रेजी ओर बोअर जातिवाद का सबसे कसैला और कडुआ अनुभव पाया। वहां पर उनके प्रारंभिक समर्थकों में दो यहूदी व्यक्ति और एक ब्रिटिश पादरी थे। इन यहूदियों द्वारा उन्हें रूस में हो रहे सामन्ती दमन की जानकारी मिली। टॉल्स्टॉय की पुस्तक दि किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू पढ़ने के पश्चात उन्हें रूसी कृषक वर्ग की असहाय स्थिति की ओर अधिक आभास हुआ। सन् 1906 में इंडियन ओपिनियम में उन्होने लिखा एक वायसराय का पद किसी भी दृष्टि से रूस के जार से कम नहीं है अंतर केवल इतना है कि ब्रिटिश लोग अपने दमनकारी तरीकों से अधिक कुशल और कम असभ्य है। परिणामतः रूसी हताश होकर आतंकवादी और उग्रवादी बन गए।

गांधी के भारत लौटने के पश्चात् ब्रिटिश राज के साथ उनका मुकाबला दक्षिण अफ्रीका की अपेक्षा अधिक चुनौतीपूर्ण था। उसके लिए उन्हें अपना पूरा समय व उर्जा लगाने की आवश्यकता थी किंतु फिर भी उन्होंने विश्व को अपनी दृष्टि से ओझल नहीं किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान पत्रिका, आत्मनिर्भर भारत के लिए पैकेज जयपुर राजस्थान, 10 अप्रैल 2020।
2. राजस्थान पत्रिका, झा प्रभात, अब आत्मनिर्भरता की और बढ़ रहा है भारत, जयपुर, राजस्थान, 28 मई 2020, पृ. 81।
3. राजस्थान पत्रिका, शाह अमित, आत्मविश्वास से भरा आत्मनिर्भर भार, जयपुर, राजस्थान, 30 मई 2020 पृ. 8।
4. एम. के. गांधी, ट्रस्टीशिप, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद 1960।
5. दशरथ शर्मा, गांधीवादी की विनोबा की देन, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, बिहार 1980।
6. डॉ. वीरेन्द्र शर्मा, आधुनिक भारतीय पुर्ननिर्माण में गांधी जी का योगदान, पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1986।
7. अग्रवाल व श्री राम, शोशल चेन्ज इन इण्डिया इश्यू एण्ड प्रोस्पेटिव यूनिवर्सिटी बुक डिपों जयपुर, 1987।
8. गुप्ता एवं शर्मा, समाजशास्त्र, साहित्य भवन, आगरा, 1982।

❖◆❖

[1] गुप्ता एवं शर्मा, समाजशास्त्र, साहित्य भवन, आगरा, 1982।